IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''विद्यार्थियों की व्यावसायिक षिक्षा अभिवृत्ति पर पारिवारिक वातारण का अध्ययन''

डॉ. मंजू षर्मा
षोध निर्देषिका
ज्योति विद्यापीठ महिला विष्वविद्यालय,
जयपुर राजस्थान भारत

अलका निर्वाण
षोधकर्त्री
ज्योति विद्यापीठ विष्वविद्यालय,
जयपुर राजस्थान भारत

सांराष

किसी खास उद्यम के लिए छात्रों को तैयार करना ही व्यावसायिक षिक्षा का परम उदेष्य है। व्यवसायिक षिक्षा सैद्वान्तिक ज्ञान पर कम तथा व्यापारिक ज्ञान पर अधिक जोर देती है। इसमे छात्र किसी विषेष विषय में तकनीक या प्रौधोगिकी पर महारत हासिल करते है। आधुनिक समय में व्यावसायिक षिक्षा के कारण ही छात्र किसी क्षेत्र विषेष का कार्य कौषल प्राप्त कर पा रहे है, जिसे वे आने वाले समय में अपने रोजगार का आधार स्तम्भ बनाते है। व्यावसायिक षिक्षा का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्व होता है। किसी भी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त किए बिना बालक अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति नही कर सकता है और आवष्यकताओं की पूर्ति के अभाव में व्यक्ति का विकास सम्भव नही है। व्यक्ति के जीवन का विकास किसी भी व्यवसाय से प्राप्त आय पर ही निर्भर करता है क्योकि व्यक्ति के रहन, सहन के स्तर, कार्य की गति एवं समाज से सम्बन्धित कार्यो पर किसी न किसी रूप से धनोपार्जन के स्त्रोत एवं प्राप्त धन की मात्रा का प्रभाव पडता है। बालक के व्यावसायिकरण की प्रक्रिया में परिवार की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योकि उसके जीवन का आधार स्तम्भ परिवार ही है। बालक के व्यक्तित्व को बनाने तथा बिगाडने का उतरदायित्व भी परिवार पर ही होता है। परिवार द्वारा ही बालक की आवष्यकताओ को पूरा किया जाता है। परिवार से बालक को अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त होते है।

प्रस्तावना–

बालक के व्यावसायिक जीवन में परिवार प्रमुख संस्था होता है क्योकि उसके जीवन का प्रारम्भ परिवार से ही होता है। समस्त प्राणियों के लिए चाहे वे मनुष्य हो अथवा पषु परिवार का महत्व होता है क्योकि प्रारम्भिक आवष्यकताओं और असहाय अवस्था में सुरक्षा के लिए मनुष्य, पषु और पक्षी अपने कुटुम्ब का सहारा लेते है। संतोषजनक अनुभवों के आधार पर बालक को सीखने की प्रेरणा मिलती है। व्यावसायिक विकास पर भी परिवार का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से पडता है। जब परिवार के सदस्यों को बालक व्यवसायिक गतिविधियों में भाग लेते हुए देखता है तो वह भी व्यावसायिक कार्यक्रमों में भाग लेने की इच्छा रखता है इसके लिए वह परिवारजनों के साथ व्यावसायिक क्रियाकलापों को सम्पन्न करता है। व्यावसायिक चयन में व्यक्ति की व्यावसायिक अभिवृत्ति की अनुकुलता आवष्यक होती है ताकि वह सफल हो सके। किषोरावस्था में व्यवसाय अपनाने के प्रति उचित दृष्टिकोण का निर्माण एवं उनकी रूचि, योग्यता एवं आवष्यकता के अनुसार कौषल के विकास हेतु अपने देष में भी माध्यमिक स्तर पर इसकी शुरूआत की गई है।

षिक्षा और व्यवसाय जीविकारूपी रथ के दो पहिये है। षिक्षा के बिना जीविकोपार्जन सम्भव नही, व्यवसाय बिना षिक्षा व्यर्थ है, अतः इसी से ही राष्ट्रीय विकास सम्भव है।

प्राचीन युग में षिक्षा का उदेष्य ज्ञानार्जन करना था इसलिए सिद्वान्त वाक्य बना '' **ज्ञान तृतीय मनुजस्थ नेत्रन्**'' उस समय षिक्षा केवल धनोपार्जन का माध्यम ही नही थी बल्कि जीवलोक के छह सुखों में ' अर्थकरी विद्या'' को भी एक सुख माना गया था।

अग्रेजों के भारत आगमन से भारतीय जनता को अंग्रेजी के साथ आधुनिक षिक्षा विषय– विज्ञान, कला, वाणिज्य, शास्त्र आदि सिखाने का अभियान चला, भारत में अंग्रेजी षिक्षण संस्थाओं का जाल तो फैला किन्तु वह जीवन यापन की दृष्टि से अयोग्य रही।

के.जी सैयदेन के अनुसार ''व्यक्ति के षिक्षा पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है, यदि ये सभी वातावरण परिवार के अच्छे रीति रिवाजों पर आधारित है तो इनका व्यक्ति की विचाराधारा और विकास पर प्रषंसनीय प्रभाव पडेगा तथा उसके षिक्षा न केवल अपने लिए अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए लाभप्रद सिद्व होगी।''

जिन परिवारों का वातावरण शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक तथा व्यावसायिक कौषल मूल्यों से युक्त होता है। उन परिवारों के बालक भी मूल्यों के सन्दर्भ में समृद्व होते है। जिस प्रकार के मूल्य परिवार के सदस्यों में पाये जायेगें, उसका प्रभाव बाल विकास में भी दृष्टिगोचर होगा।

जब परिवारो में विभिन्न प्रकार के कौषलों से युक्त कार्य किये जाते है उन परिवारों के बालकों में दक्षताओं का विकास तीव्रता से होता है।

भारत मे व्यावसायिक षिक्षा का प्रारंभ –

आधुनिक विकास के दौर में विषाल जनसंख्या की आवष्यकताओ के अनुरूप षिक्षा पद्वति के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन, रूचिपूर्ण कौषल के ज्ञान एवं षिक्षा पद्वति को राजगारोन्मुखी करने के उदेष्य से व्यावसायिक षिक्षा को विद्यालय पाठयक्रम में स्थान प्रदान किया गया है।

व्यावसायिक षिक्षा को जोडने का प्रथम प्रयास **''कोठारी आयोग (1964)''** ने किया। इस आयोग ने सरकार को माध्यमिक षिक्षा के व्यावसायिकरण का सुझाव दिया।

''राष्ट्रीय षिक्षा नीति (1986)'' के अनुसार षिक्षा को श्रम से जोडने तथा षिक्षार्थी की स्वावलम्बी प्रवृति बनाने के उदेष्य से सामान्य षिक्षा के साथ व्यावसायिक षिक्षा को भी स्वीकार्य किया गया है।

भारत में 1988 से उच्च माध्यमिक षिक्षा का व्यवसायिकरण को कार्यान्वित किया जा रहा है।

इस योजना के अन्तर्गत उच्च माध्यमिक स्तर को कक्षा 9 वी से व्यवसाय षिक्षा प्रारंभ की गयी है। यह षिक्षा एवं प्रषिक्षण सामान्य षिक्षा के साथ साथ प्रदान की जा रही है। इसके लिए पाठ्यक्रम में सम्मिलित तृतीय भाषा के स्थान पर व्यसायिक विषय के चयन का विकल्प रखा गया है। इस प्रकार हाई स्कूल के स्तर पर विद्यार्थी दो प्रकार के पाठयक्रम में से एक का चयन करते है। जिसे सामान्य अथवा व्यावसायिक पाठ्यक्रम के रूप में विभाजित किया गया है।

इसी के अन्तर्गत हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी विद्यार्थीयों के सुनहरे भविष्य निर्माण के लिए **''प्रधानमंत्री विकास योजना''** का प्रारंभ किया। इसका लक्ष्य बडे पैमानें पर उधोगो के अनुसार रोजगार सम्बन्धित कौषल का सृजन करना है।

निष्कर्षः–

षिक्षा का प्रमुख उदेष्य बालक का सर्वागीण विकास करना है इसलिए षिक्षा पर एक बडा उत्तरदायित्व बालक को जीविकोपार्जन करने एवं भावी जीवन के लिए तैयार करना है। जीविकोपार्जन के साथ आत्मप्रतिष्ठा व प्रगति, परिवार की उन्नति, समाजोत्थान एवं राष्ट्र विकास में भूमिका के लिए व्यवसाय का चुनाव करना बडा ही कठिन कार्य है।

वास्तव में व्यावसायिक षिक्षा आधुनिक युग की नई मांग है, वर्तमान में उसी षिक्षा को गुणवत्तापूर्ण षिक्षा में स्थान दिया जाता है जो छात्रों को जीविकोपार्जन करने के लिए योग्य बनायें, ताकि छात्रों को व्यवसाय परख बनाया जाए जिससे वह अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों का भलीभांति निर्वहन कर सके।

’’व्यावसायिक षिक्षा देष की प्रगति का मेरूदण्ड होता है’’ जिस पर सम्पूर्ण देष का भविष्य आधारित होता है, बालक के व्यक्तित्व के सर्वागिण विकास के लिए यह आवष्यक है कि बालक का पारिवारिक वातावरण स्वस्थ हो और समय–समय पर उठ खडी होने वाली परिस्थितियों का समाधान इस प्रकार हो कि बालक पर किसी प्रकार का दूषित प्रभाव ना पडे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल , आर. (2009) शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देषन, षिप्रा पब्लिकेषन, दिल्ली ।
2. गोलवकर, शर्मा, व्यास, डी.के (2017) निर्देष एवं परामर्ष, राधा प्रकाषन मन्दिर, प्रा.लि. आगरा।
3. कपिल, एच.के (1987) अनुसंधान विधियां, प्रकाषक हरप्रसाद।
4. लाल, आर.बी., एवं मल्होत्रा, एन. (2008) उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षा, मेरठ आर.लाल बुक डिपों।
5. पाठक, पी.डी (2016) षिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा।
6. सक्सेना, एन.आर.एस. (2008) षिक्षा सिद्वान्त, आर.लाल. बुक डिपो मेरठ।
7. सरीन एवं सरीन (2007) शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा।
8. शर्मा, आर.ए. (2017) षिक्षा अनुसंधान के मूलतत्व एवं शोध प्रकिया, आर लाल बुक डिपों, मेरठ।